ॐ

विद्या गुरु
बुंदेली पूजा-विधान

रचयिता
मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रकाशक
VIDYA SUVRAT SANGH

❑ **कृति** : आचार्य श्री विद्यासागरजी बुंदेली पूजा–विधान

❑ **आशीर्वाद** : आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज

❑ **कृतिकार** : मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

❑ **संयोजक** : बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

❑ **संस्करण** : द्वितीय

❑ **सहयोग राशि:** 10/- (पुनः प्रकाशन हेतु)

❑ **प्राप्ति स्थान** : बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना
94251-28817

❑ **प्रकाशन सहयोगी :**

❑ **मुद्रक** : विकास ऑफसेट, भोपाल (म.प्र.)

आचार्य श्री विद्यासागर जी बुंदेली पूजा

स्थापना

(ज्ञानोदय छन्द)

मोरे गुरुवर विद्यासागर, सब जन पूजत हैं तुमखों।
हम सोई पूजन खों आये, तारो गुरु झट्टईं हमखों॥
मोरे हिरदे आन विराजो, हाथ जोड कैं टेरत हैं।
और बाठ जइ हेर रये हम, हँस कैं गुरु कब हेरत हैं ॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं)

बाप मतारी दोइ जनौं नैं, बेर-बेर जनमों मोखों।
बालापन गव आइ जुवानी, आव बुढापो फिर मोखों॥
नर्रा-नर्रा कैं हम मर गये, बात सुनैं नैं कोऊँ हमाई।
जीवौ मरबौ और बुढ़ापौ, मिटा देव मोरो दुखदाई॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं...।

मोरे भीतर आगी बर्रई, हम दिन रात बरत ओं में।
दुनियाँदारी की लपटों में, जूड़ापन नैं पाऔ मैं॥
मोय कबऊँ अपनौं नैं मारौ, कबऊँ पराये करत दुखी।
ऐंसी जा भव आग बुझादो, देव सबूरी करौ सुखी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

कबऊँ बना दव मोखों बड्डौ, आगैं-आगैं कर मारौ।
कबऊँ बना कैं मोखों नन्नौ, भौतइ मोय दबा डारौ॥
अब तौ मोरौ जी उकता गओ, चमक-धमक की दुनियाँ में।
अपने घाँई मोय बना लो, काय फिरा रये दुनियाँ में॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान्...।

कामदेव तौ तुमसैं हारो, मोय कुलच्छी पिटवाबै।
सारौ जग तौ मोरे वश में, पर जौ मोखों हरवाबै॥
हाथ जोड़ कैं पाँव परै हम, गैल बता दो लड़बे की।
ये खौं जीतैं मार भगावैं, बह्मचर्य व्रत धरबे की॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं...।

हम तौ भूखे नैं रै पावैं, लडुआ पेड़ा सब चाने।
लुचईं ठडूला खींच औंरिया, तातौ वासौ सब खाने॥
इनसैं अब तौ भौत दुखी भये, देव मुक्ति इनसैं मोखों।
मोय पिला दो आतम-इमरत, नैवज से पूजत तोखों॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं...

दुनियाँ कौ जो अँधयारौ तौ, मिटा लेत है हर कोऊ।
मोह रओ कजरारौ कारौ, मिटा सके नैं हर कोऊ॥
ज्ञान-जोत सैं ये करिया को, तुमने करिया मौं कर दव।
ऊँसईं जोत जगा दो मोरी, दीया जौ सुपरत कर दव॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं...

खूबइ होरी हमने बारी, मोरी काया राख करी।
पथरा सी छाती बारे जै, करम बरैं नैं राख भयी॥
तुम तौ खूबइ करौ तपस्या, ओइ ताप सैं करम बरैं।
मोय सिखा दो ऐंसे लच्छन, तुम सौ हम भी ध्यान धरैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

तुम तौ कौनऊँ फल नइँ खाउत, पीउत कौनऊँ रस नँइयाँ।
फिर भी देखौ कैसे चमकत, तुम जैसो कोनऊँ नँइयाँ॥
हम फल खाकैं ऊबै नइयाँ, फिर भी चाने शिवफल खौं।
ओई सैं तौ चढ़ा रये हम, तुम चरणों में इन फल खौं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

ऊँसईं-ऊँसईं अरघ चढ़ा कैं, मोरे दोनऊँ हाथ छिले।
ऊँसईं-ऊँसईं तीरथ करकैं , मोरे दोनऊँ पाँव छिले॥

नैं तो अनरघ हम बन पाये, नैं तीरथ सौ रूप बनौ।
येई सैं तौ तुमें पुकारें, दै दो आतम रूप घनौं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

विद्यागुरु सौ कोऊ नैं, जग में दूजौ नाँव।
सबइ जने पूजत जिनैं, और परत हैं पाँव॥
दर्शन पूजन दूर है, इनकौ नाँव महान।
बड़भागी पूजा करैं, और बनावैं काम॥

(ज्ञानोदय)

मल्लप्पा जू के तुम मौड़ा, श्रीमति मैया के लल्ला।
गाँव आपनौ तज कैं देखौ,करौ धरम कौ तुम हल्ला॥
दया धरम कौ डण्डा लै कैं , फैरा रय तुम तौ झण्डा।
ऐसै तुम हौ ज्ञानी ध्यानी, फोरत पापों कौ भण्डा॥१॥

एकईं बिरियाँ ठाडे हो कैं, खात लेत नैं हरयाई।
नौन मसालौ माल मलीदा, कबउँ खाव नैं गुरयाई॥
जड़कारै में कबऊँ नैं ओढ़ौ, तुम चारौ प्यॉर चिटाई।
जेठमास में गर्मी सैनें, पिऔ कबऊँ नैं ठण्डाई॥२॥

तुम बैरागी हौं निरमोही, सच्ची मुच्ची में भज्जा।
बन कैं जिनवाणी के लल्ला, पूजौ जिनवाणी मज्जा॥
सब जग के तुम गुरुवर बन गये, ये में का कैसो अचरज।
गुरु के संगे मात-पिता के, गुरु बन गय जो है अचरज॥३॥

मोय तुमारी चर्या भा गई, तबइ करत अर्चा तोरी।
तीनईं बिरियाँ माला फेरत, रोज करत चर्चा तोरी॥
अर जौ मोरौ पगला मनवा, तुम खौं तज कैं नै जावै।
कहूँ रमैं नैं जो बंदरा सौ, उचक-उचक कैं इत आवै॥ ४॥

कबउँ-कबउँ जो मोरइ बन कैं, खूबइ खूब नचत भैया।
सो सब हम खों कहें दिवानौ, और कैत का-का दैया॥
भौत बडे आसामी तुम तौ, तुम व्यापार करौ नगदी।
सौदा कौ नैं काम करौ तुम, नैं दुकान नैं है गद्दी॥५॥

जग जाहिर मुस्कान तुमारी, तुम सी कला कहूँ नईंयाँ।
नैं कोऊ खों हामी भरते, नाहीं कँबऊँ करत नईंयाँ॥
मूड़ उठा कैं हेरत नईंयाँ, और कैत देखौ- देखौ।
चिटिया जीव-जन्तु दिख जावै, पै भक्तों खों नैं देखौ॥६॥

महावीर कौ समोसरण तौ, राजगिरी पै खूब लगौ।
ऊँसइ बुन्देली में शौभै, संघ तुमारौ खूब बड़ौ॥
करी बड़ेबाबा की सेवा, सो बन गये छोटेबाबा।
काम करौ तुम बड़े - बड़े पै, काय कैत छोटे बाबा॥७॥

कबउँ-कबउँ तौ तुम बोलत हौ, आगम कौ तब ध्यान रखौ।
समयसार खों खूबइ घोकौ, आतम रस खौं खूब चखौ॥
नौने-नौने ग्रन्थ रचा दये, भौत बनादय तीरथ हैं।
दुखियों की करुणा खों सुनकैं हाथ दया कौ फेरतहैं॥८॥

ये की का का कथा कहें हम, कबउँ होय जा नैं पूरी।
भक्तों खों भगवान बना कैं, हरलई उनकी मजबूरी॥
इतनौ सब उपकार करत हौ, फिर भी कछू कैत नईंयाँ।
येई सें तौ जग जौ कैरव, तुम सौ कोऊ है नईंयाँ॥९॥

अब किरपा ऐसी कर दइयो, पाँव-छाँव में मोय रखौ।
अपने घाँई मोय बना लो, अपने से नैं दूर करौ॥
'सुव्रत' की जा अरज सुनीजै,और तनक सौ मुस्कादो।
भवसागर सैं मोरी नैया, झट्टईं-झट्टईं तिरवा दो॥१०॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

गुण गावैं पूजा करैं, करैं भगति दिन रैन।
बस इत्तइ किरपा करौ, मोय देव सुख चैन॥
तुम तौ बड़े उदार हो, और गुणी धनवान।
पूजा जयमाला करी, मैं मौड़ा नादान॥
विद्यागुरु खों कैत सब, बुन्देली के नाथ।
सो बुन्देली गीत गा, तुमें झुकारय माथ॥

(पुष्पांजलिं)

बुंदेली आरती

(तर्ज : कैसे धरे मन धीरा रे-तीनों...)

गुरुवर की हो रही जय-जय रे, आरतिया उतारौ।
हाँ-हाँ रे! आरतिया उतारौ॥
मल्लप्पा श्रीमति के मौड़ा[२], ज्ञान गुरु से नाता जोड़ा[२]
शिष्य बनें गुरु स्वामी रे, गुरु-चरणा पखारौ, हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
थाल सजाऔ दीप जलाऔ, मंगल-मंगल महिमा गाऔ॥
नाचौ, गाऔ, झूमौ रे, गुरु-मूरत निहारौ, हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
चलते फिरते तीरथ गुरुजी, सब खौं भव से तारत गुरुजी॥
गुरु की शरणा पाऔ रे, गुरुवर खौं पुकारौ, हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
नगन दिगम्बर चारितधारी, ज्ञानी ध्यानी पाप निवारी॥
जगत्-पूज्य परमेष्ठी रे; मोरी किस्मत सँवारो, हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
गुरु दयालु करुणाधारी, अब तौ सुन लो विनय हमारी॥
मुस्का कै 'सुव्रत' खौं तारो रे, भव दुख सै निकारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥

(बुंदेली विधान अर्घावली)

पंचाचार

(ज्ञानोदय)

बालपने सें प्रभु दर्शन कौ, तुम पै रंग चढौ ऐंसौ।
सम्यग्दर्शन पाकें गुरु सें, रूप बना लऔ प्रभु जैंसौ॥
तन्नक सौ तौ तको नांय खों, दर्शन दै दइऔ हमखों।
हे! दर्शन आचारी गुरुवर, करें नमोस्तु हम तुमखों॥१॥

ॐ ह्रूं दर्शनाचारगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

ज्ञानगुरू नें कैसी घुट्टी, तुमें पिला दई ज्ञानइं की।
भोले भाले हम भक्तों में, जोत जगा दई ज्ञानइं की।।
अठ पहरी घी अष्टांगी सौ, ज्ञान देत रइऔ हमखों।
ज्ञानाचारी हे ! विद्यागुरु, करें नमोस्तु हम तुमखों॥२॥

ॐ ह्रूं ज्ञानाचारगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

मोय लगत कै चंदा सूरज, तोए देखबे खों निकरें।
तेरा विध चारित्र देख कें, भाग्य हमौरों के निखरें॥
कंजूसी तन्नक सी तजकें, अपनौ धन दइऔ हमखों।
हे ! चारित्राचारी गुरुवर, करें नमोस्तु हम तुमखों॥३॥

ॐ ह्रूं चारित्राचारगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

सहौ अमरकण्टक में जाड़ौ, कुण्डलपुर में गर्मी खों।
हरयाई गुरयाई नौन मिठाई, भा र्नइं रई इन धर्मी खों॥
मस्कइं मस्कइं तप के रसखों, लै कें दै दइऔ हमखों।
तपाचार के हे ! भण्डारी, करें नमोस्तु हम तुमखों॥४॥

ॐ ह्रूं तपाचारगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

तुम तौ अपने दम सें जादा, करौ तपस्या तूफ ानी।
जबईं तुमारे इन चरनों में, भरें सुरासुर नर पानी।।
वीर्यशक्ति जब बांटौ तब तौ, बिसरा नें दइऔ हमखों।
वीर्याचारी हे! विद्या गुरु, करें नमोस्तु हम तुमखों॥५॥

ॐ ह्रूं वीर्याचारगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

बारह तप

ढूँढ तनक सी कहूँ कौनियाँ, खाबौ पीवौ सब तज कें।
उपवासों की लैन लगा दई, आतम परमातम भज कें॥
फि र भी आलस करौ नें ये, राज बता दइऔ हमखों।
हे ! अनशन तपधारी गुरुवर, करें नमोस्तु हम तुमखों॥६॥

ॐ ह्रूं अनशनतपोगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

तन्नक-मन्नक एकइ बिरियाँ, रूखौ सूखौ सौ खाऔ।
फिर भी कबउँ करौ नें गुस्सा, कबउं पेट भर नें खाऔ।।
लें के तनक बांटवौ मुतकौ, जौइ सिखा दइऔ हमखों।
हे ! ऊनोदरतपधारी गुरु, करें नमोस्तु हम तुमखों॥७॥

ॐ ह्रूं अवमौदर्यतपोगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

एकइँ बिरियाँ खात ओइ पै, बन्न-बन्न के लेत नियम।
निजी पुण्य की जांच परख खों, आसक्ती खों त्यागौ तुम।।
खूबई करौ परीक्षा लेकिन, फैल नें कर दइऔ हमखों।
वृत्ति परिसंख्यान धरौ सौ, करें नमोस्तु हम तुमखों॥८॥

ॐ ह्रूं वृत्तिपरिसंख्यानतपोगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

खट्टे मीठे खारे चिपरे, कड़वे आदि छै रस खों।
बखत-बखत पैं तजकें तुमतौ, लेत-रेत आतमरस खों॥
अपने जैसों सरस रसीलौ, जीवन दे दइऔ हमखों।
हे ! रसत्यागी विद्या गुरुवर, करें नमोस्तु हम तुमखों॥९॥

ॐ ह्रूं रसपरित्यागतपोगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

कित्तउ लुकलौ छुपलौ फिर भी, बच नें सकौ तुम भक्तों सें।
सो क्षेत्रों पे जाकें बैठौ, तन्नक सोत करौटों सें॥
रहौ भीड़ में आप अकेले, दूर भगइऔ नें हमखों।
विविक्त शैयासन तप धारी, करें नमोस्तु हम तुमखों॥१०॥

ॐ ह्रूं विविक्तशैय्यासनतपोगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

जड़कारे में बिना चटाई, गर्मी में बिन हरयाई।
खड़गासन शीर्षासन करकैं, खुद में खोऔ सुखदाई।।
बन्न-बन्न सें तपा-तपा तन, निजसम चमकइऔ हमखों।
कायक्लेश तपधारी गुरुवर, करें नमोस्तु हम तुमखों॥११॥

ॐ ह्रूं कायक्लेशतपोगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

वैसें तो निर्दोष रहौ तुम, फिर भी दोष लगें कौनउं।
तौ खुद खौं, खुद के सिस्सौं खों, दै कें मौन रहौ मोनउं॥
निंदा गर्हा आलोचन से, शुद्ध बनइऔ अब हमखों।
तुम तप प्रायश्चित्त धरौ सौ, करें नमोस्तु हम तुमखों॥१२॥

ॐ ह्रूं प्रायश्चित्ततपोगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

पूज्य जनों की चार बन्न की, झुक कें भौत विनय करते।
भक्तों की जब सुनौ नमोस्तु, दै आशीष प्रेम रखते।।
अब तौ खोलौ मोक्ष किवाड़े, तीर्थंकर घांई हमखों।
विनय तपोगुण धारी गुरुवर, करें नमोस्तु हम तुमखों॥१३॥

ॐ ह्रूं विनयतपोगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

आलस तज कें जैन धरम के, जब तुम समझौ शास्त्रों खों।
तब तौ नांय-मांय नें हेरौ, पढ़ौ पढ़ाऔ सिस्सों खों॥
तोखों पढ़वें बारी विद्या, सिस्स बना दइऔ हमखों।
हे ! स्वाध्याय तपो गुणधारी, करें नमोस्तु हम तुमखों॥१४॥

ॐ ह्रूं स्वाध्यायतपोगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

जो भी तोखों हेरै टेरै, ओकी खबर रखौ तुम तौ।
त्यागी व्रतियों के रखवारे, टेरें हेरें अब हम तौ॥
खबर हमारी भी लँय रइयौ, चरण शरण दइयौ हमखों।
वैयावृत्त तपोगुणधारी, करें नमोस्तु हम तुमखों॥१५॥

ॐ ह्रूं वैयावृत्ततपोगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

बाप मतारी भाई बन्धु तज, दुनियाँदारी भी छोड़ी।
और कहें का तुमने अपनी, काया सें ममता मोड़ी।।

जब बारात मोक्ष लै जइऔ, संगै लै चलियौ हमखों।
हे ! व्युत्सर्ग तपो गुणधारी, करें नमोस्तु हम तुमखों॥१६॥

ॐ ह्रूं व्युत्सर्गतपोगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

जग कौ सार दिगम्बर मुद्रा, तप कौ सार ध्यान धरते।
जब तुम ध्यान धरौ सौ सांचउं, सिद्धों के जैंसे लगते।।
जित्तौ ध्यान धरत हो अपनों, उत्तई तारों गुरु हमखौं।
ध्यान तपो गुणधारी गुरुवर, करें नमोस्तु हम तुमखों॥१७॥

ॐ ह्रूं ध्यानतपोगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

दसलक्षण धर्म

चौका में मौका खों पाके, कौनउं कछू सुना देवै।
अथवा उल्टी सुल्टी कै कें, उपसर्गों सौ कर लेवै।।
फिर भी मुस्काऔं सो ऐंसे, लच्छन दै दइऔ हमखों।
उत्तम क्षमा धरमधारी गुरु, करें नमोस्तु हम तुमखों॥१८॥

ॐ ह्रूं उत्तमक्षमाधर्मधुरन्धर आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

तुमसौ नें खबसूरत कौनउं, नें त्यागी ज्ञानी ध्यानी।
हीरे सें मजबूत तुमइं हौ, फिर भी हौ नंईयां मानी।।
चर्या में मुलाम मक्खन से, नरियल सौ करियौ हमखों।
उत्तम मार्दव धर्म धुरन्धर, करें नमोस्तु हम तुमखों॥१९॥

ॐ ह्रूं उत्तममार्दवधर्मधुरन्धर आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

माया ठगनी छल कपटों से, तुम तौ कोशों दूर रहौ।
एक नजर में टेडे-टाड़े, छलियों खों भी ठीक करौ।।
सीधी सादी गैल तुमारी, तन्नक तौ तकियौ हमखों।
उत्तम आर्जव धर्मधुरन्धर, करें नमोस्तु हम तुमखों॥२०॥

ॐ ह्रूं उत्तमार्जवधर्मधुरन्धर आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

कैंसे हो तुम तौ निर्लोभी, जौ नें कोनउँ समझ सकै।
लोभ त्याग कें धरम रतन कौ, तुममें खूबई लोभ दिखै।।
कंजूसी अब तनक त्याग कें, धरम बाँट दइऔ हमखों।
उत्तम शौच धरमधारी गुरु, करें नमोस्तु हम तुमखों॥२१॥

ॐ ह्रूं उत्तमशौचधर्मधुरन्धर आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

झूठी मों से कबउँ नें निकरै, साँचउं-साँचउं तुम बोलौ।
सबके दिल पै राज करौ तुम, कानों में मिसरी घोलौ।।
बानी पै जिनबानी बैठी, जबइ खूब मोहौ हमखों।
उत्तम सत्य धर्मधारी गुरु, करें नमोस्तु हम तुमखों॥२२॥

ॐ ह्रूं उत्तमसत्यधर्मधुरन्धर आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

इन्द्री संयम प्राणी संयम, जब सें तुमनें ओढ़े हैं।
तब सें वौ तीरथ सौ बन गऔ, जितै जमा दए गोढ़े हैं॥
सुनकैं अब तौ अरज हमारी, दीक्षा दे दइऔ हमखों।
उत्तम संयम धर्म धुरन्धर, करें नमोस्तु हम तुमखों॥२३॥

ॐ ह्रूं उत्तमसंयमधर्मधुरन्धर आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

रखौ नें इच्छा फिर भी सबकी, इच्छा पूरी करौ भली।
देख तुमारी कठन तपस्या, हल्ला हौ रऔ गली-गली।।
सफल साधना करौ हमारी, तनक निहारौ तौ हमखों।
उत्तम तपधारी हे ! गुरुवर, करें नमोस्तु हम तुमखों॥२४॥

ॐ ह्रूं उत्तमतपधर्मधुरन्धर आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

मुठी भरौ तौ खाऔ पीऔ, बांटौ झोली भर-भर कें।
त्यागी तौरौ त्याग देख कें, मनवा नांचै सर धर कें॥
परिग्रह जैसौ हमें नें छोडो, बैरागी करियौ हमखों।
उत्तम त्याग धर्मधारी गुरु, करें नमोस्तु हम तुमखों॥२५॥

ॐ ह्रूं उत्तमत्यागधर्मधुरन्धर आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

कित्तौ तौ उपकार करत हो, फिर भी अपनौ नें मानौ।
तन्नक-मन्नक राग रखौ नें, अपनौ बस आतम जानौ।।
अपने जैंसौ नगन दिगम्बर, झट्ट बना लइऔ हमखों।
हे ! आकिंचन धर्म धुरन्धर, करें नमोस्तु हम तुमखों॥२६॥

ॐ ह्रूं उत्तमआकिंचनधर्मधुरन्धर आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

तुमें देख कें ऐंसौ लागै, परम वीतरागी मिल गए।
जबइँ हजारौ भाई बैन खौं, ब्रह्मचर्य के पथ मिल गए॥

जल में कमल सरीखे तुम तौ, ब्रह्म रमण दइऔ हमखों।
ब्रह्मचर्य व्रत धर्म धुरन्धर, करें नमोस्तु हम तुमखों॥२७॥

ॐ ह्रूं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मधुरन्धर आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

षट्-आवश्यक

नें तौ सुख में सुखी होत तुम, नें दुख में तुम होत दुखी।
बहिर्मुखी कौ भाव त्याग जौ, बन गए अंतर मुखी-सुखी।।
देख तुमारी सामायिक खों, सिद्धशिला झलकै हमखों।
हे ! सामायिक कर्ता गुरुवर, करें नमोस्तु हम तुमखों॥२८॥

ॐ ह्रूं सामायिकगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

कोउ एक तीर्थंकर प्रभु की, तीनइं बिरियाँ जाप करौ।
भक्ति भाव सें तन्मय होकें, करकें नमोस्तु पाप हरौ।।
भक्त और भगवान मिलन को, दृश्य दिखा दइऔ हमखों।
पूज्य वंदना गुणधारी गुरु, करें नमोस्तु हम तुमखों॥२९॥

ॐ ह्रूं वन्दनागुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

तीनइं बिरियाँ बड़ौ स्वयंभू, करकें जब भगवान भजौ।
तबतौ ऐंसौ लगै हमें कै, चौबीसी कौ धाम सजौ।
आदिनाथ सें महावीर के, दर्श करा दइऔ हमखों।
हे ! आवश्यक स्तुतिकर्ता, करें नमोस्तु हम तुमखों॥३०॥

ॐ ह्रूं स्तवनगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

आंगे को अनुमान लगा कें, तुमतौ अपने काम करौ।
मस्कईं मस्कईं करौ साधना, तनक भौत आराम करौ।।
लगबै से पैलें दोषों कौ, त्याग सिखा दईयौ हमखों।
प्रत्याख्यान कर्म गुण धारी, करें नमोस्तु हम तुमखों॥३१॥

ॐ ह्रूं प्रत्याख्यानगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

वैसें तौ हुशयार भौत हौ, फिर भी कौनउं दोश लगें।
तौ निंदा आलोचन करकें, सांचे गुरु निर्दोष बनें॥
तुम सौ शुद्ध दिखै नै कौनउँ, शुद्ध बना दइऔ हमखों।
प्रतिक्रमण के कर्ता गुरुवर, करें नमोस्तु हम तुमखों॥३२॥

ॐ ह्रूं प्रतिक्रमणगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

जित्ते सुन्दर उत्ते कोमल, फिर भी तन सें मोह नहीं।
छाले फौले आयें तौ भी, मन में तन्नक क्षोभ नहीं॥
खड़गासन में बाहुबली से, शोभ रहे हौ गुरु हमखों।
कायोत्सर्ग ध्यानधारी गुरु, करें नमोस्तु हम तुमखों॥३३॥

ॐ ह्रूं कायोत्सर्गगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

तीन गुप्तियाँ

तुमरे मन की कोई नें जानें, तुम सबके मन की जानौ।
अपने मन की कबउं करौ नें, अरज कोउ की नें मानौ।।
फिरभी मन की करा लेत तुम, मन की कै दइयौ हमखों।
मनोगुप्ति धारी हे ! गुरुवर, करें नमोस्तु हम तुमखों॥३४॥

ॐ ह्रूं मनोगुप्तिगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

या तौ मौन रहौ तुम या फिर, बोलो तन्नक-मन्नक सौ।
वचनों खों ऐंसें बरसाऔ, जैंसें बरसै अमृत सौ।।
कित्तउ सुनलौ बचन आपके, होए नें संतुष्टि हमखों।
वचनगुप्ति धारी हे ! गुरुवर, करें नमोस्तु हम तुमखों॥३५॥

ॐ ह्रूं वचनगुप्तिगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

देख तुमारी कोमल काया, सांचउं हमें लगै ऐंसौ।
चलते फिरते तीरथ हौ तुम, कौनउ नंइयां तुम जैंसौ।।
देख ध्यान मुद्रा खों तोरी, सिद्धालय झलकै हमखों।
कायगुप्ति धारी हे ! गुरुवर, करें नमोस्तु हम तुमखों॥३६॥

ॐ ह्रूं कायगुप्तिगुणसुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः अर्घ्यं...।

(पूर्णार्घ्य)

एड़ी और चुटइया तक लौ, मूलगणों सें तुम सोहौ।
मन्द-मन्द मुस्कान बांट कें, बुन्देली खों तुम मोहौ।।
भाग्य तुमईं बुन्देलखण्ड के तनकथाम लईओ हमखों॥
तुमईं सरीखौ अनरघ बनबे, करें नमोस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं षट्त्रिंशगुण-सुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे नमः पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

विद्यागुरु की भक्ति में, धूप लगै नें ठण्ड।
जयमाला में रम रहौ, सांचउं बुन्देलखण्ड॥

(जोगीरासा)

दुनियाँ में सबसे न्यारी है, भारत भूम हमारी।
भारत में बुन्देलखण्ड की, का कैनें बलिहारी॥
जब लौं कौनउं समझ सकौ नें, ये की महिमा न्यारी।
तब लों माटी कूरा जैसी, लुटी-पिटी सी भारी॥१॥

लेकिन जा कैनात सुनें कें, घूरे के दिन फिरबें।
फिर जौ तौ बुन्देलखण्ड है, भाग्य काय नें चमकें॥
जितै कबउं मुनियों के दर्शन, मिलबौ बड़ौ कठिन थौ।
सुनौ इतईं तो चतुर्मास कौ, होवौ लगै सुपन सौ॥२॥

जाड़े में जब परै माइआ, कुकर-कुकर सब जाबें।
ज्वांर बाजरा कोदों खा कें, मौं करिया पर जाबें॥
गेहूँ मिलबौ बड़ौ कठिन थौ, फैली भूख गरीबी।
लगै दण्ड बुन्देलखण्ड जौ, दिखै नें कोउ करीबी॥३॥

महावीर सें अब लों जित्ते, मुनी अज्जका वीरा।
उनमें इक्के दुक्के भए हैं, बुन्देली के हीरा॥
लेकिन बुन्देली पै जबसें, पंइयां परे तुमारे।
सांची कै दउं ये माटी के, हो गए बारे-न्यारे॥४॥

भूख गरीबी सबरी मिट गई, कोउ दिखै नें दुखिया।
खण्ड-खण्ड बुन्देलखण्ड जौ, अखण्ड हो गऔ सुखिया॥
टलें फावडों से जड़ माया, चेतन धन का कईये।
बुन्देली में समौसरण कौ, देख नजारौ रइये॥५॥

बुन्देली के भाग्य विधाता, तुमें कैत जग सारौ।
भाग्य हमौरों कौ चमकइऔ, अब नें पल्ला झारौ॥
हम बुन्देली तुम बुन्देली, रिश्तौ गजब हमारौ।
सो बुन्देली चेला चेली, अर 'सुव्रत' खों तारौ॥६॥

ॐ ह्रूं षट्त्रिंशगुण-सुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

बुन्देली सें का बँधें, विद्यागुरु के गान।
फि र भी नमोस्तु हम करें, करबै खों कल्यान॥

(पुष्पांजलिं)

(प्रशस्ति)

पृथ्वीपुर में जब भओ, पार्श्व पंचकल्यान।
तब बुन्देली में रचौ, विद्यागुरु विधान॥
दो हजार सत्रह गुरु, जून आठ तारीख
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नतशीश
गुरु-मुनि दीक्षा का हुआ पचासवाँ त्यौहार।
गुरु सेवा में भेंट तब, छोटा सा उपहार॥

॥ इति शुभम् ॥